संदर्भ ग्रंथ-सूची

1.	डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव, भारतीय सामाजिक समस्या	पृ. 1
2.	डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत, बदलते मूल्य औरआधुनिक हिंदी नाटक	पृ. 3
3.	सं. नगेंद्रनाथ वसु, हिंदी विश्वकोश भाग – 23	पृ. 503
4.	सं. डॉ. श्यामसुंदरदास, हिन्दी शब्दसागर भाग – 10	पृ. 4167
5.	सं. रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश भाग – 5	पृ. 283
6.	डॉ. रामशंकर शुक्ल, रसाल भाषा शब्द कोश	पृ. 1522
7.	डॉ. विमल भास्कर, हिन्दी में समस्या साहित्य	पृ. 90
8.	डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव, भारतीय सामाजिक समस्या से उद्धृत	पृ. 5
9.	गिरिराज किशोर, पेपरवेट	पृ. 14
10.	हेमन्तकुमार पानेरी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : मल्यसंक्रमन	पृ. 173
11.	गिरिराज किशोर, शहर दर शहर	पृ. 92
12.	वही,	पृ. 127
13.	गिरिराज किशोर, पेपरवेट	पृ. 102
14.	वही,	पृ. 68
15.	वही,	पृ. 36
16.	डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव, भारतीय सामाजिक समस्या	पृ. 27
17.	गिरिराज किशोर, शहर दर शहर	पृ. 27
18.	वही,	पृ. 27
19.	गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का	पृ. 80
20.	वही,	पृ. 38
21.	वही,	पृ. 37

22. गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का पृ. 72

23. वही, पृ. 70

24. गिरिराज किशोर, शहर दर शहर पृ. 14

25. राम आहुजा, सामाजिक समस्याएँ पृ. 334

26. गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का पृ. ६८

27. राम आहुजा, सामाजिक समस्याएँ पृ. 354

28. गिरिराज किशोर, पेपरवेट पृ. 50

29. गिरिराज किशोर, शहर दर शहर पृ. 16

30. गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का पृ. 50

31. गिरिराज किशोर, शहर दर शहर पृ. 127

32. गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का पृ. 22

33. वही, पृ. 13

34. वही, पृ. 22

35. गिरिराज किशोर, शहर दर शहर पृ. 115

36. वही, पृ. 18

37. गिरिराज किशोर, गाना बडे गुलाम अली खां का पृ. 52

38. वही, पृ. ३०

39. वही, पृ. 57

40. गिरिराज किशोर, शहर दर शहर पृ. 68

41. वही, पृ. 95

42. गिरिराज किशोर, हम प्यार कर लें पृ. 22

43. वही, पृ. 25

44.	गिरिराज किशोर, शहर दर शहर	पृ. 32
45.	डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव, भारतीय सामाजिक समस्या	पृ. 371
46.	वही,	पृ. 372
47.	डॉ. जितेंद्र वत्स, साठोत्तर हिन्दी कहानी में राजनीतिक चेतना	पृ. 45
48.	राम आहुजा, सामाजिक समस्याएँ	पृ. 77
49.	गिरिराज किशोर, पेपरवेट	पृ. 52
50.	वही,	पृ. 55
51.	पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी युगबोध संदर्भ	पृ. 218
52.	गिरिराज किशोर, पेपरवेट	पृ. 74
53.	वही,	पृ. 111
54.	वही,	पृ. 41, 42

उपसंहार

उपसंहार -

गिरीराज किशोरजी के 'गाना बड़े गुलाम अली खां का', 'पेपरवेट', 'हम-प्यार कर लें' और 'शहर-दर-शहर' कहानी संग्रहों का समग्र अध्ययन करने के उपरांत मेरे लघुशोध प्रबंध का निचोड़ प्रस्तुत उपसंहार में देने का हमारा प्रयास हैं ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध में प्रथम अध्याय गिरिराज किशोरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का चित्रण करते समय उनके व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला है और उनकी रचनाओं की जानकारी दी है ।

गिरिराज किशोरजी का सातवें दशक के ऊन विशिष्ट सर्जको में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । उन्होंने आज तक जो साहित्य लिखा है । उससे उनकी एक अलग पहचान स्थापित हुई है । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं को अपनाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है । वे कहानी उपन्यास, नाटक, आलोचना, संस्मरण बाल-साहित्य आदि क्षेत्रों में मौलिक साहित्य-सृष्टि कर रहें हैं ।

गिरिराज किशोरजी को बचपन और यौवन में अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष करना पड़ा । जीवन के विविध अनुभवों की सँकरी से गुजरते हुए उन्होंने अपनी संवेदनाओं को उस अनुभव के साथ जोड़कर यथार्थ साहित्य का सृजन किया है । उसमें वे काफी सफल रहे हैं । बार-बार नौकरी का छूटना और बार-बार नौकरी पाने से उनके आत्मसम्मानी, स्वाभिमानी और प्रयत्नवादी स्वभाव का परिचय हो जाता है । अर्थाभाव की स्थिति में भी उन्होंने साहित्य सृजन किया है । कोई भी उतार चढ़ाव; कोई बाधा इस प्रवाह को रोक न सकी; उसमें कल्पना कम और यथार्थता का महत्त्व अधिक रहा है । वातावरण की सत्यता, अनुभव का अपनापन और लेखकीय तटस्थता गिरिराज किशोरजी की अपनी विशेषता है । विभिन्न मन:स्थितियों को सत्यता के साथ चित्रित कर देने की क्षमता उनमें है । उनके साहित्य में मानवियता का स्वर दिखाई देता है । इसी कारण उनका साहित्य देश की सीमाओं में बँधा न होकर सार्वकालीक और सार्वदेशिक बन गया है । उनका अधिकांश साहित्य अन्य भाषाओं में अनूदित हुआ है । अपनी सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि और गहन अध्ययन से वे मानव मन की गहराई तक पहुँचकर समस्याओं के मूल स्वरूप की सत्यता को उजागर करते हैं । वे जिंदगी में आदर्शवादी और लेखन में यथार्थवादी है ।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत यहाँ अनुशीलन के लिए निर्धारित कहानी संग्रहो में संकलित कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है । गिरिराज किशोरजी ने सामाजिक विषमताओं से घिरे व्यक्ति के मानसिक उलझावों को अपनी कहानियों में बहुत सहजता से चित्रित किया है । 'अप्पर मिड़िल क्लास' की कुंठाओं, असमर्थताओं और कृत्रिमता को गहराई के साथ आलोच्य कहानियों में चित्रित किया है । उनके लिए मनुष्य और संघर्षशील परिवेश सर्वोपरि है । उनकी सहानुभूति 'प्रतिष्ठित' को न मिलकर उस इंसान को मिलती है जो अपनी पहचान बनाने के लिए दिन रात जूझ रहा है । उन्होंने अपनी कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण किया है । गिरिराज किशोरजी ने दो प्रकार के विषयों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है । एक राजनीतिक जिनमें भ्रष्टाचार

जनित व्यवस्था, पदलोलुपता, स्वार्थी प्रवृत्तियाँ, यथार्थ रूप में चित्रित है । राजनीतिक कहानियों में भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश के विद्रुप रूप को इनकी कहानियाँ इतनी कड़वाहट से अभिव्यक्त करती हैं कि तंत्र की निर्ममता और बेरहम नेताओं पर तीखा व्यंग्य प्रहार करती है ।

सामाजिक कहानियों में जीवन की छोटी-मोटी घटनाओं, प्रसंगों के आधार पर बनाकर किसी-न-किसी परिवेशगत समस्या पर प्रकाश डाला है । उन्होंने कथानक में पात्रों को अनेक परिस्थितियों में डालकर उनकी आन्तरिक वृत्तियों का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया है । उनकी कहानी में धर्म, संस्कृति, राजनीति अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान की विभिन्न धाराओं का समन्वय हुआ है । उन्होंने हर कहानी में किसी न किसी रूप में सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है । जनसाधारण के बीच के त्रास, मूल्यहीनता, आत्मसंघर्ष उत्पीड़न का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है ।

गिरिराज किशोरजी के कहानी के सभी पात्र वर्तमान समाज के प्रतिनिधि है । पात्रों को मानवीय भूमि पर उतारने का प्रयास किया है । इससे चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता एवं यथार्थता आयी है । कहानी में पात्रों का चयन वास्तविक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से किया गया है । कुछ वर्गों और विभिन्न पेशे के लोगों को उनकी विशेषताओं एवं विकृतियों के साथ अत्यंत स्पष्ट ढंग से चित्रित करके कहानी में सजीवता लाने का प्रयत्न किया है । गिरिराज किशोरजी की कहानी की विषय की परिधि विस्तृत होने के कारण पात्रों का चयन समाज के विस्तृत क्षेत्र से हुआ है । कहानी में भिन्न -भिन्न श्रेणियों के पात्रों को स्थान मिला है । मानव जीवन की सहज अनुभूतियों का यथार्थ एवं सूक्ष्म चित्रण अत्यंत कलात्मक ढंग से दिया है ।

गिरिराज किशोरजी की कहानियों में विद्यमान संवादों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि आपने पात्रों की प्रकृति, मनोवृत्ति एवं आन्तरिक हलचल का निरूपण संवादों द्वारा बड़ी सफलतापूर्वक किया है । सरल संक्षिप्त, स्वाभाविक संवादों द्वारा पात्रों के विचार एवं व्यवहार का चित्रण किया है । पात्रों के स्वभाव, उनकी शिक्षा-दीक्षा एवं स्थिति के अनुकूल ही संवादों की निर्मिति हुई है । दैनंदिन जीवन में प्रयुक्त वार्तालाप का प्रयोग करके संवादों को रोचक एवं आकर्षक बनाया है । संवादों द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उजागर किया है । परिस्थिति एवं पात्रों के अनुकूल कही लम्बे तो कही छोटे संवाद लिखे हैं । वैसे आपके संवाद, सरल, स्वाभाविक सार्थक एवं सशक्त है । उनमें पात्रानुकूलता एवं प्रभावात्मकता है। वे नाटकीय त्वरा एवं प्रभाव से परिपूर्ण है। वे चरित्रों के यथार्थ के द्योतक हैं । घटनाओं को गतिशील बनानेवाले हैं । उनमें पात्रों की संघर्षपूर्ण मन:स्थिति को चित्रित करने की क्षमता है ।

गिरिराज किशोरजी ने अपनी कहानियों में कथ्य के अनुकूल सामाजिक, राजनीतिक वातावरण की निर्मिति की है । कहानीकार ने सजीव एवं मार्मिक वातावरण की सृष्टि के लिए परिवेश का चित्रण अधिक किया है । व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं, व्यक्ति की स्थिति, उसकी मनोदशा उसकी परिस्थिति आदि का पात्रानुकूल चित्रण करके परिवार की स्थिति का सत्यरूप प्रस्तुत किया है । कही राजनीतिक हलचल की ओर

सजीव संकेत किया है । राजनेताओं की चारित्रिक विशेषताओं के द्वारा वर्तमानकालीन राजनीति की यथार्थ तस्वीर खिंची है । कही स्थानीय विवरों के माध्यम से तत्कालीन वातावरण का सजीव रूप प्रस्तुत किया है । कहीं कहानियों को यथार्थ रूप देने के लिए और उनमें सजीवता एवं स्वाभाविकता लाने के लिए प्रकृति चित्रण के अंतर्गत प्राकृतिक विपदाओं का जीता जागता चित्रण किया है । इस तरह गिरिराज किशोरजी ने विविध घटनाओं विवरणों एवं प्राकृतिक दृश्यों के चित्रांकन द्वारा अपनी कहानियों में कथ्यानुकूल वातावरण की सृष्टि की है । इसके साथ ही राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण करके कहानियों को स्वाभाविक एवं यथार्थ रूप देने का स्तुत्य प्रयास किया है ।

गिरिराज किशोरजी का भाषा पर असाधारण अधिकार है । शब्दों के विभिन्न प्रयोगों से उनकी भाषा में निखार आया है । उन्होंने कहानियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है । पात्र जिस परिस्थिति और परिवेश में विचरण करते हैं, उसी के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है । पात्रों की मानसिकता, टूटन और बिखराव के अनुसार अलग-अलग प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है । अन्तराल चिह्नों से युक्त वाक्य जो पात्रों की मनोवृत्ति का सूक्ष्मता के साथ चित्रण करने वाले हैं । कहीं-कहीं स्थानों पर अंग्रेजी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग पात्रानुरूप किया है । समय और परिस्थिति के अनुरूप विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं को प्रकट करनेवाली शब्दावली का प्रयोग किया है । अंग्रेजी मिश्रित हिंदी वाक्यों से कुछ विशेष बातों पर जोर देकर परिस्थिति स्पष्ट करने में गिरिराज किशोरजी सफल हो गये हैं । कुछ नये शब्दों का प्रयोग भी किया है । छोटे-छोटे सरल वाक्यों के साथ भाषा में नाटकीयता, संवेदनशीलता होने के कारण उनकी कहानी की भाषा सार्थ बन गयी है । स्थान-स्थान पर उन्होंने अरबी-फारसी और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है । बोलचाल की भाषा के मुहावरे और कहावतों का भाषा में प्रयोग पात्रों के अनुकूल, विषयानुकूल एवं परिस्थिति के अनुकूल हुआ है ।

गिरिराज किशोरजी ने आलोच्य कहानियों में यथार्थता लाने के लिए विविध शैलियों का प्रयोग किया है - विवरणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली, नाटकीय एवं संवाद शैली, प्रतीकात्मक, स्वप्नशैली आदि शैलियों का प्रयोग करके कहानियों में यथार्थ वातावरण की निर्मिति करने में सफल हो गये हैं ।

गिरिराज किशोर की कहानियों को भाषाशैली की दृष्टि से देखा जाए तो सफल प्रतीत होती है । भाषा के विभिन्न प्रयोगों से उनकी कहानियों में निखार आया है । शैली के विभिन्न रूपों को उन्होंने अपनी कहानियों के लिए चुना है । जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि भाषा शैली की दृष्टि से गिरिराज किशोरजी की कहानियाँ सफल बन गई है ।

गिरिराज किशोरजी ने अपनी कहानियों में विविध समस्याओं का चित्रण किया है । कहानीकार ने समसामयिक समाज जीवन की पहचान, उसमें जीवन-यापन कर रहे आदमी की तकलीफ, उनका संघर्ष पूरी ईमानदारी के साथ अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास किया है । समाज और व्यक्ति की समस्याओं, मानसिक जटिलताओं का चित्रण गहराई के साथ अपनी आलोच्य कहानियों में है । गिरिराज किशोरजी ने

आलोच्य कहानियों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है । सामाजिक समस्या के अंतर्गत विविध समस्याओं का चित्रण किया है । वर्तमान जीवन अवैध संबंधों की समस्याओं से घिरा है । गिरिराज किशोरजी की कहानियों में प्रधान रूप में इस समस्या के महत्त्व देकर विवाहपूर्व अवैध संबंध, विवाहोत्तर अवैध संबंध, कच्ची उम्र में अवैध संबंधों की समस्या का चित्रण किया है । पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी में संघर्ष की समस्या, नौकरों की कामचोर प्रवृत्ति की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अकालग्रस्त लोगों के शोषण की समस्या, प्रदूषण की समस्या, व्यसनाधीनता की समस्या, परिवार विघटन की समस्या, बाल अपराध की समस्या, बीमारी की समस्या, संतान की समस्या, विवाह की समस्या, शिक्षा समस्या, आधुनिकता बोध, कुण्ठा आदि समस्याओं को चित्रित करके समकालीन जीवन की यथार्थ तस्वीर खिंची है । गिरिराज किशोरजी ने सामन्य आदमी के जीवन में अर्थाभाव के कारण निर्माण होनेवाली समस्याओं को चित्रित किया है । आलोच्य कहानियों में आर्थिक विषमता, बेकारी की समस्या का चित्रण किया है । अर्थाभाव के कारण सामान्य आदमी को अनेक कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इसका कहानियों में यथार्थ चित्रण करने में वे सफल हो गये हैं । राजनीतिक समस्या के अंतर्गत राजनीतिक षड़यंत्र और वर्तमान भ्रष्ट राजनीति की पोल खोली है । स्वार्थी, सत्तालोलूप, अवसरवादी, कुठिल राजनेताओं का चित्रण करके राजनीति में हो रहे राजनीतिक मूल्यों के विघटन की समस्या को उन्होंने चित्रित किया है । उपर्युक्त विवेचन के आधार पर मैं इस निष्कर्ष तक पहुँची हूँ कि उन्होंने अपनी सभी कहानियों में किसी-न-किसी समस्याओं को उजागर कर यथासंभव समाधान देने का प्रयास किया है ।

निष्कर्ष यह है कि गिरिराज किशोरजी वर्तमान युग के श्रेष्ठ कहानीकारों में से एक है । गिरिराज किशोरजी में अनुभव को भाषा से और भाषा को अनुभव से उकेरने की क्षमता है । इसी विशेषता के कारण वे समकालीन कथाकारों से अलग पहचान बनाने में सिद्ध हो गए हैं ।

उपलब्धियाँ :-

1. गिरिराज किशोर की कहानियों का मुख्य विषय सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ पर आधारित है । जिसे व्यक्त करने में गिरिराज किशोरजी सफल हुए है ।

2. गिरिराज किशोरजी ने अपने अनुभव के आधार पर रचनाओं का निर्माण किया है ।

3. पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सीमित पात्र संख्या, पात्रों का परिस्थितिनुकूल स्वभावानुकूल सूक्ष्म अंकन और भाषा का उचित प्रयोग आदि गिरिराज किशोरजी की कहानियों की चरित्रगत विशेषताएँ दिखाई देती हैं ।

4. कथानक में विविधता, प्रेरणादायी चरित्र-चित्रण, रोचक संवाद, भाषा एवं शैली के विभिन्न प्रयोग गिरिराज किशोरजी की कहानियों की विशेषताएँ है ।

5. आलोच्य कहानियों में विविध समस्याओं का सूक्ष्म और गहराई से चित्रण कर यथासंभाव समाधान देने का प्रयास किया है ।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

गिरिराज किशोरजी के साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्न लिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है ।

1. गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य ।
2. गिरिराज किशोर के साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन ।
3. गिरिराज किशोर के साहित्य में प्रतिबिम्बित समाज-जीवन ।
4. सातवां दशक और गिरिराज किशोर ।
5. गिरिराज किशोर के साहित्य में चित्रित नारी-जीवन ।